

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'

बाल गीत

१

हमरहि खातिर सुरुज उगइ छथि
हमरहि खातिर चान
हमरहि खातिर कोटि तरेगन
हमरहि ले आसमान।
हमरहि खातिर साँझ पड़इए
राति सँ होइए प्रात
हमरहि खातिर रौद अबैए
हमरहि लेल बसात
हमरहि खातिर गाछ फड़इए
जामुन, आम, लताम।
पानि तपैए, भाफ बनैए
भाफ उड़इए, मेघ बनैए
सेहो हमरे ले ऊपरसँ
धरती पर रिमझिम बरसैए
हमरहि खातिर धरती मैया
देथि गहूम आ धान।
हमरहि खातिर फूल फुलाइछ
उज्जर- पीयर- लाल
कतहु असीमित सागर अछि तँ
पर्वत कतहु विशाल

सभटा हमरहि लेल बनाकऽ
नुका गेला भगवान।

२

बुच्ची बढ़ती,
लिखती-पढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के।
तिलक-दहेजक दानव केर
उत्पात मचल अछि मिथिलामे,
तै लए बुच्ची
खडग उठौती
हमरा चिन्ता कथी के।
ज्ञान आर विज्ञानक संपति
अर्जित करती जीवनमे,
नव सुरुज आ
चान बनौती
हमरा चिन्ता कथी के।
लोकक मोल बुझै छै एखनहुँ
लोक बहुत छै दुनियामे,
संगी अप्पन
अपनहि चुनती
हमरा चिन्ता कथी के।
अपनहि श्रम सँ बाट बनौती
एहि बबूर केर जंगलमे,
दुख सँ लड़ती
आगाँ बढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के।

३

मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर,
तौँ तँ हमरा पढ़ा-लिखा दे
कर नहि कनियौँ कथूक डर।
तिलक-दहेजक बल पर किन्नहु
हम कतहु नहि करब बियाह,
अज्ञानी, ढोंगी, पाखंडीक
संग नहि जीवन करब तबाह
अपन पएर पर ठाढ़ होएब हम
होएब अपनहि पर निर्भर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर।
संपति अर्जित करब सतत हम
ज्ञान आर विज्ञान केर
नाम बढ़ाएब हम दुनियामे
सगरो हिन्दुस्तान केर
हमर स्वप्नमे 'किरण', 'कल्पना'
सतत कानमे हुनकहि स्वर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर।
हम्मर गहना होएत मम्मी
हमर आत्म-विश्वास टा
विजय अंध-विश्वासक ऊपर
सत्यक दिव्य प्रकाश टा
जीयब स्वामिभमान केर संगहि
एतबहि अछि अभिलाष हमर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर ।